Research Guru
Online Journal of Multidisciplinary Subjects (ISSN : 2349-266X)
Volume-17, Issue-3, December-2023
www.researchguru.net

भारत में शाक्त-साधना का विकास

डॉ. महेशकुमार मकवाणा
आसि. प्रोफ़ेसर, गवर्नमेंट आर्ट्स कोलेज, गांधीनगर

शक्तियों की उपासना आर्यों में सामान्य जनता से ग्रहण की गई है। शक्तियों की पूजा प्रागैतिहासिक काल में भी मिलती है।

समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण से विचार करने वाले सभी विद्वान एक मत से यह स्वीकार करते हैं कि तंत्रों में निम्न जनता के विश्वास ही गृहीत हुए है। डॉ. कोशाम्बी ने बताया है कि तांत्रिक क्रियाओं के रूप में प्राचीन फसल पक जाने पर किये जाने वाले आधारों को आयों ने स्वीकार किया था। कुछ रहस्यमय या जादू की क्रियाओं द्वारा बाह्य कठोर जीवन और जगत को अधिक अनुकूल बनाने की भावना से ही, जादू, नृत्य, चित्रकला, कविता एवं संगीत का उद्भव हुआ है।[१] दार्शनिकों ने इन कियाओं की सैद्धान्तिक व्याख्या करके इनका आर्यीकरण कर लिया।

स्थानीय देवियों को आर्यों ने काली का रूप मानकर स्वीकार कर लिया है। जापान में स्त्रीयां अब तक दाँत काले करती हैं[२] भारतवर्ष में भी इनका प्रचार है।

असम में 'त्रिपुरबाला' की पूजा के लिए एवं कुमारी की तलाश करते है पंचमकार का प्रयोग करते हैं, 'शबरोस्तव' कहलाता है[३] अर्थात् शबर जाति से यह शाक्त-पद्धति ग्रहण की गई है। बेनीकांत काकाती के अनुसार यह शबरोत्सव सम्भवतः विन्ध्याचल के प्रदेश से असम में प्रचलित हुआ, इसका तात्पर्य यह हुआ कि मध्य प्रदेश में भी यह मनाया जाता होगा।

योगिनीतंत्र के अनुसार यह शाक्तपूजा किरातों से ग्रहण की गई है[४] निम्न जातियों के मुक्तयौन सम्बंध को स्वीकार कर आर्यों ने परवर्ती पुराणों में यह स्वेच्छाचार देक्ताओं में भी दिखाकर 'धार्मिक आज्ञा' स्वयमेव स्वीकार कर ली है। 'कालिका पुराण' में ब्रह्मा तथा उनकी पुत्री सध्या वराह, पृथ्वी, कपोतमुनि, तारावती, काकुस्थ, उर्वशी, शिव, सावित्री आदि के यौन सम्बंध के उदाहरण देकर कपोतमुनि द्वारा बहाया गया है "पुरातन काल में भरद्वाज ने विवाहिता पद्मा को जिस प्रकार भोगा था, उसी तरह में भी किसी की विवाहिता 'तारावती' को चाहता हूँ"[५]

असम में प्रचलित 'त्रिपुरासम्प्रदाय' को विद्वान दक्षिण से आया हुआा मागते है। क्योंकि उस सम्प्रदाय में कुमारी की पूजा होती है और कुमारी पूजन काशीपुर में होता है, अतः इस अनुमान के पुष्ट नआधार है। 'रुद्रशिव' के लेखक एन. वैंकटरमैया का भी यही विचार है। वैंकटरमैया के अनुसार केरल के त्रावनकोर में अब भी इसके अवशेष मिलते हैं। तमिल देश में नवयुवक विवाह के पूर्व अब भी कन्या का वेष धारण करते हैं। देवदासी प्रथा भी दक्षिणी है[६]

असम में हयग्रीव, मत्स्य, माधव, वाराह एवं वासुदेव के पीठ हैं। इनमें हयग्रीव के विषय में बेनीकांत का मत है कि यह देवता भिन्न उत्पत्तिका है, वैष्णवों ने इसे शुद्ध कर लिया है, इसके साथ वामाचार संयुक्त है, भूटानी लोग इसे अब भी पूजते हैं[७] बेनीकांत जी का यह भी स्पष्ट मत है कि वैष्णवों की पंचरात्र संहिताओं में सर्वप्रथम शाक्ततत्त्वों को स्वीकार किया गया था[८] और ये शाक्ततत्त्व सामान्य जनता में प्रचलित थे। वैष्णवधर्म में मातृपूजा की छाया 'नायिका' के रूप में बराबर रही है[९]

दक्षिणी भारत के द्रविण धर्म को आर्यों ने उसी प्रकार समेट लिया है, जिस प्रकार अन्य प्रदेशों के विश्वासों और क्रियाओं को। फिर भी आर्यों में इस स्वीकृति के विरुद्ध कुछ न कुछ कहा जाता रहा है। अनार्य धर्मो को शिव के साथ सम्बद्ध कर दिया गया है। गणेश एवं' हनुमान सम्भवतः टाटेम (कुलदेवता)थे, बाद में इन्हें शिवपुत्र बना दिया गया । हनुमान को राम का सेवक बना दिया गया जो स्पष्ट ही सामंती प्रवृत्ति के अनुकूल था ।

दक्षिणी भारत में सप्तमाताओं की पूजा प्रचलित है। इन देवियों का स्वरूप आर्यों द्वारा स्वीकृत शास्त्रीय शाक्तमत से पर्यात सादृश्य रखता है-ये देवियाँ कष्ट देकर अपनी पूजा के लिए विवश कर देती हैं[१०] पोलरेम्मा देवी तेलगू प्रदेश में चेचक की देवी है। यह अन्य कष्ट भी देती है।

देवी को भगाने का उपाय यह है कि नागफनी की पत्तियों को द्वार पर डालना चाहिए इसमें जादू की भावना यह है कि इन पत्तियों को देखकर देवी समझ लेगी कि यह जगह बस्ती रहित

है। आर्य-शाक्त-धर्म की पूजा-पद्धति में यह जादूमिश्रित आचार सर्वत्र मिलता है।

इन देवियों की प्रसन्नता के लिए दक्षिण में 'जात्रा' निकाली जाती है, देवी की मूर्ति का उत्सव मनाया जाता है। इसमें बलि भी होती है।

शिवचन्द बोस ने शाक्त पूजा में अनेक भयंकर कृत्यों का उल्लेख किया है।[११] इन कृत्यों को द्रविड़ादि जातियों से ही लिया गया है। द्रविड़ साधक भी देवियों को 'पार्वती' का अवतार मानते हैं; तंत्रों में यही विश्वास दुहराया जाता है।[१२]

शाक्त शैव धर्म से सम्बंद्ध कथाओं में भी द्रविड़ तत्त्व मिलते हैं[१३] द्रविड़ों में नारी मानवी और देवी-दोनों रूपों में प्रभावशालिनी एवं प्रबल है। उसके प्रेम तथा शाप अब भी पुरुषों पर प्रभाव डालने वाले माने जाते हैं, जब मृत्यु के बाद वह प्रेत बनती है तब तो प्रलय ही कर देती है[१४] वृक्षों, नदी, नालों, टीलों, पर्वतों या अन्य किसी वस्तु की पूजा अब तक आर्य नारियों में प्रचलित है, यह पूजा भी अधिकांशतः अनायों से ग्रहण की गई है।

इसका यह अर्थ नहीं है कि आयों में सभी अंधविश्वास अनायों से ही आया है, परन्तु उनके अंधविश्वास के स्वरूप ने आर्य-अंधविश्वास को दूर तक प्रभावित किया है, यह भी सत्य है।

ईसा की छुट्टी शताब्दी तक यह आदान उस सीमा तक पहुंच चुका था जबकि उसने ब्राह्मण धर्म-साहित्य, दर्शन, कला आदि सभी क्षेत्रों को प्रभावित करना प्रारम्भ कर दिया था।

यह प्रभाव केवल ब्राह्मण धर्म पर ही नहीं पड़ा, उसने बौद्ध एवं जैन सम्प्रदायों को भी प्रावित किया; फलतः वज्रयान शेव, तथा वैष्णव साधना का शास्त्रीय रूप जनता के सामान्य धर्म से अलग करके नहीं समझा जा सकता ।

यह शोधपत्र ICSSR द्वारा प्राप्त मेजर रिसर्च प्रोजेक्ट के विषय 'महापंथी स्त्री संतो की आराधी भजनवाणी : सामाजिक एवं दार्शनिक अर्थघटन' अंतर्गत हो रहे संशोधन का हिस्सा है ।

संदर्भ :

(1) D.D. Koshambi: An Introduction to the study of Indian History, Bombay, 1956, page
23-48.
(2) The Mother goddess of Kamakhya-Beni Kant Kakati, Gohati, 1948, Page 40.
(३) बही, पृष्ठ ४८
(४) वहीं, पृष्ठ ५०
(५) बेनीकांत काकती-पृष्ठ ५१
(६) बही, अध्याय २ में विस्तृत वर्णन
(७) यहीं
(८) वही
(९) यही
(१०) इनके नाम ये है, Poleramma, Ankamma, Muthyalamma, Dilli Polasi, Bangaramma,
Mathamma, Renuka.- Dravidian Gods in Modern Hinduism- W. Theodore Elmore
Madras 1925 Page 11
(११) वही, पृष्ठ ३७
(१२) वही
(१३) वही,
(१४), वही, अध्याय-द्रविड़ प्रेत पूजा